

Class - B.A. Part - I

Sub - Hindi (Hon) Paper - I

by Ravshan Rana

- ① पृथ्वीराज रासो के काव्योच्छर्ष पर प्रकाश डालें ?
- उत्तर - 'पृथ्वीराज रासो' के रचयिता चंदबर दाई ने इस ग्रंथ में अनेक घटनाओं का समावेश किया तथा कुछ घटनाओं पर विवाद में भी चारणों ने जोड़ी है, जिससे लगता है कि यह काव्य घटनाकाश है किंतु समस्त घटनाचक्र के भीतर कवि ने अपनी रसदृष्टि का निर्योजित रूप में विस्तार किया है। अतः इसे महाभारत की तरह एक विशाल महाकाव्य मान सकते हैं। इस महाकाव्य में दो रस प्रमुख हैं - शृंगार और वीर। ये दोनों रस पृथ्वीराज चौहान के चरित्र के दो पार्श्व उभूक कर रहे हैं। वह जितना वीर है उतना ही शृंगार-प्रेमी भी है। कवि ने एक ओर तो युद्धों के वर्णन में वीरता और पराक्रम की अदम्य शक्ति की प्रशंसा की है और दूसरी ओर रूप-सौंदर्य और 'प्रेम' के भी ऊपर चित्र उतारे हैं। नारी दोनों रसों के केन्द्र में है। उसे पाने के लिए युद्ध होते हैं और पाने के बाद जीवन का विलासपक्ष अपनी पूरी समुपयोगिता के साथ उभरता है। ध्यान देने की बात यह है कि प्रेम और शौर्य के चित्रण में कवि ने कुछ नैतिक मर्यादाओं का

निर्वाह किया है जिसके कारण रस
की सात्विकता सुरक्षित रही है।
'पृथ्वीराज रासो' में वस्तु-वर्णन
का भी आधिक्य है। कवि ने वही
तन्मयता के साथ नगरों, वनों, संग-
वनों, किलों आदि का वर्णन किया
है। युद्धक्षेत्र के दृश्य तो अद्भुत
प्रतिमा का परिचय देते ही हैं। कवि
ने समय और क्रिया को एक साथ
चित्रों में चित्र कर रंग और ध्वनियों
को भी रूपायित कर दिया है।
भाव, वस्तु और ध्वनि की सम्मिश्रित
प्रभावध्वनि के उदाहरण पृथ्वीराज रासो
में भरे पड़े हैं। एक उदाहरण निम्न
रूप में द्रष्टव्य है।
पवज्जिय घोर निस्सन रान चौहान
चहुँ दिशि,

सकल सुर समान समर बल
जंत्र मंत्र तिसि,
उठि राज पृथ्वीराज वाण
लग्ग मनहु कीर नत
कहत तेगो मन वोग लगान
मनहु बीजु झट्ट घट्ट।
कीर उ और अंगार रसो के
पौषण के लिए आवश्यकता नुसार अपने
रसों की भी योजना की गई है।
और उनके वर्णन में कवि ने उतनी
ही तन्मयता दिखायी है।
पृथ्वीराज रासो के भाषा के
के संबंध में भी विवाद रहा है।
वस्तुतः यह काव्य विमल शैली में
लिखा गया है जो ब्रज भाषा का वा-
रूप है जिसमें राजस्थानी वोलियों
का मिश्रण है।